Vol - 10 / March - 2021 ISSN 2395-051X

Research Times

A Peer Reviewed Research Journal

(Published under RUSA Plan of M.P. Govt.)

Patron
Dr. B.D. Ahirwar

Editor
Dr. Rashmi Dubey

Reaccredited By NAAC "A"

Government Autonomous Girls Post Graduate College of Excellence, Sagar (M.P.)

14. 'अज्ञेय' के उपन्यास में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण 69
डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय

15. वर्तमान समय में लोकविधाओं व लोककलाओं पर गहराता संकट 74
डॉ. अपर्णा चाचोंदिया

16. कल्याण रागांग का गीतों में प्रयोग 79
डॉ. हरिओम सोनी

17. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों में अन्तर्निहित "व्यक्ति की गरिमा" मूल्य का लैंगिक संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन 83
डॉ. चन्द्रकान्ता जैन एवं डॉ. रामाकान्त

18. विश्व बाजार में हिन्दी भाषा की प्रासंगिकता 93
डॉ. आनंद तिवारी

19. तनाव प्रबन्धन में योग एवं अध्यात्म की भूमिका 97
डॉ. एस.एल. साहू

20. भारत में कैशलैस भुगतान व्यवस्था 100
डॉ. एम. एम. चौकसे

21. Role of Artificial Intelligence in Retail Market Growth 104
Prof D.K.Gupta

22. Impact of GST on Indian Economy during COVID-19 109
Dr. Sunil Shrivastava

23. An Introduction of the Paramaras 114
Dr. Naveen Gideon

24. Stress:Causes, Symptoms and management 117
Dr. Santosh Kumar Gupta & Dr. Anupi Samaiya

25. The Bhagavadgita and the Poetry of Robert Browning 123
Nisha Indra Guru

26. Anthelmintic Activities of Alcoholic Extracts of Some Seeds 131
Dr. Varsha Dubey

27. Liquid Waste Management In Higher Education Institutions 135
Dr. Imrana Siddiqui

ISSN 2395-051X

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों में अन्तर्निहित "व्यक्ति की गरिमा" मूल्य का लैंगिक संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. चन्द्रकान्ता जैन - सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग
डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म. प्र.)
डॉ. रामाकान्त - सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग (अतिथि)
डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म. प्र.)

सारांश -

मूल्य, मानव जीवन की आधारशिला के रुप में देखे जाते हैं। लोकतांत्रिक मूल्य, भारतीय समाज का मौलिक विश्वास और संवैधानिक सिद्धान्त है। जिसके द्वारा व्यक्ति जीवन में अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक व्यवहार को करने के लिए अभिप्रेरित होता है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी प्रतिष्ठा होती है, जो इस पूर्वधारणा पर आधारित है कि प्रत्येक मानव प्राणी स्वयं में सार्थक है तथा उसकी वैयक्तिकता बहुमूल्य है। यह बात सभी पर समान रूप से लागू होती है चाहे कोई व्यक्ति किसी भी जाति, धर्म, रंग, लिंग, स्थान अथवा क्षेत्र से संबंध रखता हो। व्यक्ति के इस गरिमा को उसी अवस्था में सुरक्षित रखा जा सकता है जब उसे बाह्य हस्तक्षेप के बिना जीने, स्वतंत्रतापूर्वक तथा प्रसन्नता से रहने के अधिकार प्राप्त हो। इस संदर्भों को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन को प्रस्तावित किया गया है। जिसके अन्तर्गत उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों में अन्तर्निहित "व्यक्ति की गरिमा" मूल्य का लैंगिक संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। शोध समस्या के लिए अध्ययन क्षेत्र मध्य प्रदेश में स्थित सागर जिले को बनाया गया है। शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है और न्यादर्श एवं न्यादर्शन की प्रक्रिया में शोधकर्ता ने न्यादर्श के रूप में सागर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में से कुल 1200 विद्यार्थियों (600 छात्र एवं 600 छात्राओं) का चयन, स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि के द्वारा किया गया है। इस शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने डॉ. आलोक गार्डिया एवं डॉ. सुनील कुमार सिंह (2012) द्वारा विकसित एवं मानकीकृत लोकतांत्रिक मूल्य मापनी नामक मनोवैज्ञानिक परीक्षण का उपयोग किया है।

मुख्य शब्द - शिक्षा, उच्चतर माध्यमिक स्तर, मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य, लैंगिक संदर्भ।

शिक्षा मनुष्य के जीवन और व्यवहार को परिमार्जित करती है। इसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली यंत्र माना जाता है। शिक्षा न केवल बदलाव का एक सशक्त माध्यम है, बल्कि उस बदलाव की दशा और दिशा को निर्धारित करती है, जैसा कि शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दार्शनिकों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये हैं जो इस प्रकार से है। गाँधीजी के कथनानुसार, "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य में निहित शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक श्रेष्ठ शक्तियों का सर्वांगीण विकास से है।" जॉन डीवी के अनुसार, "शिक्षा व्यक्ति की उन सब योग्यताओं का विकास है जो उसमें अपने पर्यावरण पर नियन्त्रण रखने वाली सम्भावनाओं को पूर्ण करने की सामर्थता प्रदान करे।" तथा अरस्तु के कथनानुसार, "शिक्षा स्वस्थ शरीर में स्वस्थ्य मस्तिष्क का निर्माण करती है।"